MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the special mention. But before that, there is one report to be laid by Mr. Makwana.

PAPERS LAID ON THE TABLE—Contd

Report of Dinesh Singh Committee on Tripura

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI YOGENDRA MAKWANA): Sir, I have great pleasure in laying the report of Dinesh Singh Committee on Tripura on the Table of this House. [Placed in Library. See No. LT-1253/80]. In view of the urgency of the matter and also the bulk of the Report along with its annexures, it has not been possible to lay simultaneously the Hindi version of the Report on the Table of the House today. As such, copy of the Hindi version of the Report would be laid on the Table of the House at the earliest opportunity.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Special mention by Shri Jaswant Singh.

REFERENCE TO THE REPORTED STRAINED CIVIL-MILITARY RELATIONS IN SRINAGAR AND ACTIVITIES OF JAMAIT-E-TULBA IN JAMMU AND KASHMIR

SHRI JASWANT SINGH (Rajasthan): Sir, I have to mention a matter of urgent public importance in the House. It relates to the occurrences that took place in Srinagar on the 26th of July this year. It would be wasting the time of the House for me to recount all the details of those occurrences. I would, however, wish to highlight some of the points with regard to incidents that took place.

An army other rank on convoy duty, having been on duty for the past three days in Ladakh and on that particular day having been on duty for 14 hours at a stretch, driving straight from Dras to Srinagar, happens to brush against a tempo in the crowded Badshah Chowk in Srinagar. That is on the evening of 26th July. It is about 8.30 in the evening. This driver is unaware of what is happening. Immediately, crowd collects about one kilometre from where the incident has taken place. The driver is halted; he is pulled out; he is beaten up. The ignition key of the vehicle, which belongs to President of India, is taken away. The driver, who is in uniform, is then taken to a police thana which is against all conventions, against all regulations. There he is thrown inside a cell where there are already four other occupants. Inside the cell he is again beaten up.

Two completely unconnected vehicles of the army, having drawn water from a water point are travelling from one part of Srinagar to another. They are halted; they are set on fire. The drivers are taken out. One of the occupants is shot at. He is still in the military hospital in Srinagar. He has a bullet injury in the stomach. Simultaneously, the army camp in Batmaloo is set upon; the compound wall is pulled down; the telephone connections are snapped, cut deliberately and not restored for three days, with the result that these units who were on the Tatoo Ground in Batmaloo in Srinagar had to establish radio-relay connections with their headquarters, who are also in Srinagar. Later in the evening, this very camp is set on fire, a peripheral barrack belonging to General Reserve Engineering Force is set on fire, and an officer who is sent with other ranks to collect the vehicle and to rescue the other ranks is set upon; he suffers grievous injury and has a fractured arm.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not go in so much of details.

SHRI JASWANT SINGH: The point of the matter is, I cannot even recount the event unless I tell you...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Don't take long time.

SHRI JASWANT SINGH: You have not given even five minutes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We have given three minutes for special mention. Please finish within one minute.

SHRI JASWANT SINGH: I would like to bring to your notice the essential part of it: it is not the incident alone. That is only a symptom of a much deeper malady. Sir, Sheikh Abdullah's Government agrees to have a joint committee of inquqiry. He then questions the Ministry of Defence for issuing a clarificatory statement. Sir, I make bold to assert that anti-national forces in the valley today are stronger than they have even been since 1971? It is not a party matter. I am not raising it as a party issue. It cuts across party-lines and I would appeal to the House, through you, Sir, and directly to the treasury benches, please do not blunt the sword that you yourself wish to effectively wield.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही (उत्तर प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन साहब, सन् 1947 में जब देश का बंटवारा हुआ, और बटवारे के बाद यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि हिन्दुस्तान के नागरिक पाकिस्तान का झगड़ा लेकर जुलूस निकालेंगे और हिन्दुस्तान के नागरिक हिन्दुस्तान के विरोध में और पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाएंगे। इतना ही नहीं, यह भी कहेंगे कि खाना खाएंगे हिन्दुस्तान का, जल पिएंगे हिन्दुस्तान का और नारा लगाएंगें कि काश्मीर को पाकिस्तान में मिला दो। यह सब आज काश्मीर में जमायते इस्लामी के लोग और जमायत तुलबे के लोग कर रहे हैं। यह पता नहीं कि किन कारणों से वे शेख साहब को बदनाम कर रहे हैं। ये लोग कहते है कि हम जो कुछ भी कर रहे है वह शेख साहब के इशारे पर कर रहे हैं। मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता है कि शेख साहब जैसे व्यक्ति जिसका इतिहास दूसरे प्रकार का रहा है, इस तरह की बातों को शह देंगे। मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं होता है। लेकिन काश्मीर में जो कुछ हो रहा है और वह भी एक ऐसी जगह पर जहां पर हिन्दुस्तान, चीन और पाकिस्तान की सरहदें है, किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। ये वही एलीमेंटस है जो हमारी सेना के व्हीकल्स जलाते हैं। हमारे देश के किसी भी हिस्से में सेना के व्हीकल्स नहीं जलाए जाते हैं। अगर छोटी छोटी घटनाएं हो जायें और सेना की किसी गाड़ी की सिवल गाड़ी से टक्कर ही जाय तो बदले में सेना की गाड़ी को जला दिया जाय, इन घटनाओं के पीछे यही लोग हैं। जमायते इस्लामी और जमायते तुलबे जैसी जमातों के नाम पर यह सब हो रहा है। हमारे गृह मंत्री जी यहां पर बैठे है। हमें विश्वास है कि सरकार का ध्यान इन बातों की तरफ गया होगा। जब भी इस प्रकार की घटनाएं होती है तो देश के लोगों में काफी परेशानी पैदा हो जाती है। ऐसी घटनाएं दूसरी भावनाओं को भी जन्म देती हैं। इसलिये मैं चाहूंगा कि सरकार ऐसे लोगों को जो भारत भूमि पर पाकिस्तान का झंडा लेकर प्रदर्शन करते हैं और भारत के विरोध में और पाकिस्तान के पक्ष में नारे लगाते हैं उनके लिए हिन्दुस्तान में जगह नहीं होनी चाहिए। अगर भारत में रहे तो भारत के नागरिक की तरह से बिहेव करे। अगर वे इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहते हैं तो उन्हें सीमा के उस पार भेज देना चाहिए। उनकी एक्टिविटीज यहां ही सीमित नहीं है। भुट्टो साहब को जब पाकिस्तान में फांसी लगाई गई तो आप जानते है कि भुट्टो साहब को फांसी देने में हिन्दुस्तान का कोई मतलब नहीं था, लेकिन फिर भी लगातार तीन चार दिन तक पूरे श्रीनगर में और श्रीनगर के आसपास के दूसरे शहरों में माइनोरिटिज की दुकानें जलाई गई, माइनोरिटीज के घर जलाए गये, उन पर हमले किये गये। क्या वहां के लोगों ने कहा था कि भुट्टो साहब को फांसी दो? इन सारी घटनाओं के पीछे जमायते इस्लामी के लोग हैं। इन पर अगर सख्ती से कदम नहीं उठाया गया तो फिर ये लोग दूसरे पाकिस्तान की भी कल्पना कर सकते हैं और कर भी रहे हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि ये लोग अगर यहां के नागरिक होकर नहीं रहना चाहते हैं तो

[श्री नागेश्वर प्रसाद शाही]

इन को उस पार भेजने की व्यवस्था जरूर होनी चाहिए ।

श्री सैयद रहमत अली (आन्ध्र प्रदेश) : डिप्टी चेयरमैन साहब, आज जिस स्पेशल मेंशन की बात करने के लिये खड़ा हुआ हूं तो मुझ से पहले इस हाउस मे दो मोअ्‌ज़िज़ अरकान ने श्रीनगर की हालत के बारे में तफसरा किया है । मैं इस मौके पर बड़े दुख और अफसोस के साथ गमी गुस्से का इजहार करना चाहता हूं कि जमायते-इस्लामी से ताल्लुक रखने वाले स्टुडन्ट विंग की जानिब से श्रीनगर में इस्लामिक गवर्नमेंट मुनअकिद करने के ताल्लुक से जो तैयारियां की जा रही है उसके सिलसिले मे एक प्रस कान्फ्रैंस का वहां के स्टुडेन्ट यूनियन के लीडर शेख इस्लाम ने मुखातिब किया था । प्रैस कान्फ्रैंस में वह यह बात कहते है कि हम हिन्दुस्तान के वफादार नही हैं, प्रेस कान्फ्रेंस मे वह यह बात कहते हैं कि हम हिन्दुस्तान की गुलामी से काश्मीर को आजादी दिलायेंगे। वह यह बात कहते हैं कि हम हिन्दुस्तान के कांस्टिट्यूशन के वफादार नही है । वे यह बात कहते हैं कि हम हिन्दुस्तान में ईरान मे खुमैनी जिस तरह से इस्लामिक इन्क्लाब लाया है इस तरह का इस्लामी इंकलाब लाकर रहेगे । मेरा अपना अहसास यह है, वैसे शाही साहब ने कहा कि सीमा के पार छोड़ दिया जाय, लेकिन मैं सरकार से यह मांग करना चाहता हूं कि इन अफरात के गद्दारी का इल्जाम को लेते हुए इन वतन-दुश्मनों का मुंह काला करने के लिये सख्त से सख्त इबरतनाक सजायें इनको दी जानी चाहिए । जहां तक काश्मीर का हिन्दुस्तान से इलहाक का ताल्लुक है, या काश्मीर में या हिन्दुस्तान मे रहने वाले मुसलमानों की वफादारी का ताल्लुक है, मैं यह बात याद दिलाना चाहता हूं कि जब पाकिस्तान ने पहली बार कश्मीर पर हमला किया तो तन मन धन की बाजी लगाने वालों मे मुसलमान भी दूसरे भाईयों के साथ पहलू से पहलू मिलाकर चल रहे थे और हिन्दुस्तान के मुसलमानों की वफादारी को मुस्तबे करार देने वाले जमायते-इस्लाम के अनासिर क्या इस बात को भूल सकते हैं कि सबसे पहले शहीद होने वाले ब्रिगेडियर उस्मान थे जिनकी आज कब्र काश्मीर में बनी हुई है । 1965 में पाकिस्तान के उस जंग को क्या फरामोश कर सकते है जब कि हिन्दुस्तान के फौज के हवलदार अब्दुल हमीद अपने हाथ में बम लेकर पाकिस्तानी टैंकों को तोड़ते हुए अमन की नींद सो गये और अपनी सहरग का लहू देते हुए इस बात का सबूत दिया कि मादरे-वतन की आजादी, उसकी जमहूरियत को बचाने के लिय और उसकी इलाकाई तालभियत को बनाये रखने के लिये कुर्बानी की जब जरूरत पड़ेगी हिन्दुस्तान में रहने और बसने वाला विला तकसीस मजहबो-मिल्लयते हिन्दू-मुस्लिम-सिख-पारसी सभी तरह की कुर्बानी करने का हौसला और दम रखता है । मैं इस मौके पर यह बात कहना जरूरी समझता हूं कि हिन्दुस्तान को काश्मीर के हके खुदइरादियत दिलाने की बात करने वाले जमायती-इस्लाम का स्टुडेन्ट विंग जो है उसको यह सोचना चाहिए कि हिन्दुस्तान के साथ काश्मीर के किस्मत को बावस्ता कर लिया है और बाजाब तौर पर न सिर्फ हिन्दुस्तान इस ऐवान में बल्कि यू० एन० ओ० में और सारी दुनिया के सामने काश्मीर का मसला साफ तौर पर रखा है और वहां की आवाम ने वहां के इतखाबात के जरिये अपनी पसन्द की हुकूमतों को लाते हुए इस बात का सबूत दिया है कि काश्मीर हिन्दुस्तान का एक लाजिमी हिस्सा है और उसका रिश्ता ऐसा है जैसे कि तन का और सर का रिश्ता होता है । हिन्दुस्तान के नक्शे

पर नजर डालें तो काश्मीर हिन्दुस्तान के सर पर दिखाई देगा । वे हमारे तन से सर को हटाने की बात करते है तो हम उनको सख्ततरीन सजायें देने के लिये मांग करते है और खासतौर पर मुझे अफसोस जाहिर करना पड़ेगा कि काश्मीर की गवर्नमेंट ने आज तक ऐसे गद्दारे-वतन को गिरफ्तार नहीं किया । यह बात और है कि वहां पर दफा तिरकली है और कुछ लिटरेचर जब्त किया है । लेकिन जो यह कहने फिरने वाले अनासिर है जो मुसलमानों को बदनाम करना चाहते है ऐसे लोगों को गिरफ्तार नहीं किया है । इस बारे में मैं मरकवी सरकार से यह चाहता हूं कि काश्मीर की सरकार ने वह बात करे और कहे कि मिरकवी हुकूमत इस चीज को मामूली नहीं समझती है जिससे कि ऐसे लोगों को जुबान खोलने का मौका न मिले ।

REFERENCE TO THE REPORTED HAVOC CAUSED BY FLOODS IN UTTAR PRADESH

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) : आदरणीय उपसंभापति महोदय, मैं सरकार का ध्यान बाढ़ की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं । उस बाढ़ की विभीषिका से पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश में करोड़ों रुपये की फसल बरबाद हो गई है और लाखों करोड़ों की संख्या में पशु मारे गये और लाखों करोड़ों मनुष्य बेघरबार हो गये हैं । अभी एक सरकारी रिपोर्ट आई है उसमें है कि :

"The flood situation in eastern part of Uttar Pradesh continued to be alarming as the Ganga and the Ghagra eroded fresh areas cutting off five districts from the rest of the State... Balia, Deoria, Gonda, Basti and Jaunpur were the districts still cut off in Uttar Pradesh following breaches caused by flood waters in several inter-district and national highways."

उपसभापति महोदय, पूर्वी उत्तर प्रदेश बाढ़ की विभीषिका का हमेशा शिकार होता रहा है । प्रतिवर्ष बाढ़ आती है । लाखों करोड़ों रुपये की फसल नष्ट हो जाती है । पशु बह जाते है । करोड़ों की सम्पति नष्ट हो जाती है । पिछले 6 साल से मैं मैम्बर पार्लियामेंट हूं, सरकार हमेशा वचन देती है कि हम इस विभीषिका को रोकने के लिए शार्ट टर्म और लांग टर्म योजना बना रहे है । जनता सरकार के समय में यहां पर बरनाला साहब ने वचन दिया कि हमने नेपाल सरकार से समझौता कर लिया है और करनाली में, भालू बांध में, पंचेश्वरी में नेपाल सरकार और हिन्दुस्तान सरकार से समझौता हुआ है । उसमें बांध बनाया जाएगा, भाखड़ा नांगल डेम की तरह वहां पर भी बांध बनाया जाएगा जिससे हम बिजली भी दे सकेंगे और हम पानी भी सिचाई के लिए दे सकेंगे । पंडित जवाहर लाल नेहरू जब प्रधान मंत्री थे, उपसभापति महोदय, आप पार्लियामेंट की प्रोसीडिंग्स को पढ़ें, यह कहा गया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की बाढ़ को रोकने के लिए नेपाल सरकार और दिल्ली सरकार में बातचीत हो रही है । 30 साल का जमाना गुजर गया लेकिन अब तक जनता सरकार, लोक दल सरकार ने भी वचन दिया उस संबंध में टोस एवं समयबद्ध कार्यक्रम नहीं बनाया गया । मेरा कहना यह है कि जब तक हिन्दुस्तान की सरकार नेपाल की सरकार से राबती को बांधने के लिए, करनाली योजना को इम्प्लीमेंट नहीं करती है, भालू बांध योजना को इम्प्लीमेंट नहीं करती है, पंचेश्वरी योजना को इम्प्लीमेंट नही करती है पूर्वी उत्तर प्रदेश को बाढ़ की विभिषिका से नहीं बचाया जा सकता है । पूर्वी उत्तर प्रदेश आजादी की लड़ाई में हिन्दुस्तान में सब से आगे था । सब से ज्यादा कुर्बानी हिन्दुस्तान में पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों ने दी है । लेकिन यह इलाका तरक्की की रफ्तार में सब से पीछे है । इसलिए मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की तीन करोड़ जनता को बचाने के लिए, उनके जान-